अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं – जैन धर्म कोविद (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) ''तेगिच्छं'' का अर्थ है-
(क) पैरों में चप्पल पहनना (ख) सावद्य चिकित्सा करना
(ग) पासों से खेलना (घ) अष्टापद जुआ (ख)

(b) मलशोधन के लिए तेल, गुटिका या एनिमा लेना अनाचार है-
(क) वत्थिकम्म (ख) विरेयणे
(ग) दंतवणे (घ) विभूषणे (क)

(c) कुल अनाचीर्ण हैं-
(क) 42 (ख) 47
(ग) 33 (घ) 52 (घ)

(d) लवण कितने प्रकार का होता हैं-
(क) 6 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 3 (क)

(e) जैन मुनि भोजी होता है -
(क) सचित्त (ख) अचित्त
(ग) मिश्र (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) ''उच्छुखंडे'' कौनसा अनाचीर्ण है-
(क) 33 (ख) 34
(ग) 36 (घ) 35 (ख)

(g) 'भिक्षा विधि' का उल्लेख किस सूत्र में है-
(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) अनुयोगद्वार सूत्र
(ग) आचारांग सूत्र (घ) नन्दी सूत्र (ग)

(h) प्रत्येक वनस्पति के भेद हैं-
(क) 10 (ख) 12
(ग) 11 (घ) 08 (ख)

(i) ''धनेरिया'' उदाहरण है
(क) ऐकेन्द्रिय (ख) बेइन्द्रिय
(ग) तेइन्द्रिय (घ) चौरिन्द्रिय (ग)

(j) तिर्यंच एकेन्द्रिय के कुल कितने भेद हैं-
(क) 22 (ख) 20
(ग) 48 (घ) 06 (क)

(k) 56 अन्तर्द्वीप मनुष्य होते हैं-
(क)ऐकान्त सम्यग्दृष्टि (ख) ऐकान्त मिथ्यादृष्टि
(ग) मिश्र दृष्टि (घ) तीनों ही (ख)

(l) दसवाँ व्यन्तर देव है-
(क) धनु (ख) महोरग
(ग) श्याम (घ) पाणपन्ने (घ)

(m) रूपी अजीव के भेद हैं-
(क) 530 (ख) 30
(ग) 563 (घ) 560 (क)

(n) आश्रव तत्त्व के उत्कृष्ट भेद हैं-
(क) 20 (ख) 82
(ग) 42 (घ) 12 (ग)

(o) समुद्रपाल मुनि ने कौनसी भावना भाई थी-
(क) संवर (ख) आश्रव
(ग) निर्जरा (घ) लोक (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(a) 'कीयगडं' का अर्थ साधु के निमित्त से खरीद कर दिया गया अशन आदि है। (हाँ)

(b) अंजन, दाँतुन आदि के आचरण से जीव हिंसा संभव नहीं है। (नहीं)

(c) जैन मुनि कच्चे इक्षु खण्ड, कच्चे फल आदि का सेवन कर सकते हैं। (नहीं)

(d) द्वीपायन ऋषि ने द्वारिका का विनाश करने का निदान कर लिया। (हाँ)

(e) प्रतिमाधारी साधु पाँच प्रकार से भिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। (नहीं)

(f) बादर नामकर्म के उदय से पृथ्वीकाय के जिन जीवों को सूक्ष्म शरीर प्राप्त होता है, वे बादर पृथ्वीकाय कहलाते हैं। (नहीं)

(g) महोरग जाति का सर्प ढाई द्वीप में होता है। (नहीं)

(h) दसवाँ देवलोक प्राणत है। (हाँ)

(i) किसी के दोष प्रकट करना, अभ्याख्यान कहलाता है। (नहीं)

(j) याचना परीषह पन्द्रहवाँ परीषह है। (नहीं)

(k) राग उत्पन्न करने वाली क्रिया पेज्जवत्तिया है। (हाँ)

(l) चना, परमल आदि का आहार लेना विरसाहारे कहलाता है। (नहीं)

(m) गुरु के समक्ष दोषों को प्रकट करना आलोचना है। (हाँ)

(n) प्रायश्चित्त के कुल दस भेद हैं। (नहीं)

(o) वचन विनय के दो भेद हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(a)	पंसुखारे	(क) निराबाध	लवण
(b)	आसंदी	(ख) 4 तीर्थंकर	कुर्सी
(c)	श्री कृष्ण	(ग) परिग्रह	तीर्थंकर
(d)	आभ्यन्तर	(घ) कुर्सी	परिग्रह
(e)	सुख	(च) लवण	निराबाध
(f)	द्रव्य	(छ) प्रायश्चित्त	निक्षेप
(g)	द्वारिका	(ज) सर्प	औदारिक
(h)	छेद	(झ) धर्मध्यान	दीक्षा
(i)	निर्यापक	(य) चरणकमल	प्रायश्चित्त
(j)	अणुप्पेहा	(र) प्रतिसेवना	स्वाध्याय
(k)	अपायविचय	(ल) दीक्षा	धर्मध्यान
(l)	आतुर	(व) स्वाध्याय	प्रतिसेवना
(m)	दिद्विय	(क्ष) औदारिक	क्रिया
(n)	नागदमनी	(त्र) निक्षेप	सर्प
(o)	जलोदर	(ज्ञ) क्रिया	चरणकमल

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a) मैं क्षुधा आदि परीषहों को सहन करने वाला एवं जितेन्द्रिय हूँ। निर्ग्रन्थ

(b) मेरे लिए राजपिण्ड का सेवन करना निषिद्ध है। निर्ग्रन्थ महर्षि

(c) मेरे कर्म भोगने की 82 प्रकृतियाँ हैं। पाप

(d) मैं सातवाँ यति धर्म हूँ। सत्य (सच्चे)

(e) मेरे कुल 50 भेद हैं। प्रायश्चित्त

(f) मैं इन्द्रिय, कषाय और योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आत्मगुणों की रक्षा करता हूँ। प्रतिसंलीनता

(g) मैं चीर-फाड़ आदि करने से लगने वाली क्रिया हूँ। वेयारणिया (वैदारिणिकी)

(h) मैं स्थावर दशक का पाँचवाँ भेद हूँ। अस्थिर नाम

(i) मैं ढाई द्वीप के अन्दर पूर्व ज्योति एवं कांति वाला हूँ। चर ज्योतिषी

(j) मैं दसवाँ भवनपति देव हूँ। स्तनित कुमार

(k) मैं ऐसा देव हूँ, जो पाँचवें देवलोक के ऊपर एवं छठे देवलोक के नीचे रहता हूँ। तेरह सागरिया /तीसरा किल्विषी

(l) हम ऐसे मनुष्य हैं जो एकान्त मिथ्यादृष्टि हैं, अल्पकषायी होने से मरकर देवलोक में उत्पन्न होते हैं। अन्तर्द्वीपज मनुष्य

(m) मैं ऐसी भूमि हूँ, जहाँ तीर्थंकर, गणधर, साधु-साध्वी आदि होते हैं। कर्मभूमि

(n) भक्तामर स्तोत्र के इस श्लोक में पुष्पवृष्टि नामक प्रातिहार्य का वर्णन है। 33वाँ श्लोक

(o) हम ऐसे देव हैं जो आपकी समवशरण जैसी विभूति को धारण नहीं कर सकते। हरिहरादि देव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) दसवें से लेकर सतरहवें नम्बर तक के अनाचीर्णो के नाम क्रमशः लिखिए।

उ. 10 सन्निही, 11गिहिमत्ते, 12 रायपिण्डे, 13 किमिच्छए, 14 संवाहणा, 15 दंत पहोयणा, 16 देह पलोयणा, 17 संपुच्छणा

(b) पंचासव परिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया।

उ. पंचनिग्गहणाधीरा, निगंथा उज्जुदंसिणो।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।

निर्ग्रन्थ पाँच आश्रवों के त्यागी, तीन गुप्तियों से गुप्त, षट्काय जीवों की यतना करने वाले, पाँच इन्द्रियों को वश में रखने वाले, धीर और ऋजुदर्शी होते हैं।

(c) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ. अवाउडा	शरीर से वस्त्र हटा देना
ताइणो	षट्काय जीवों के रक्षक मुनि
जुत्ताणं	लगे हुए
कीयगड़ं	साधु के लिए खरीद कर दिया गया अशन वसनादि।

(d) दीक्षार्थी को दीक्षा लेने से पूर्व एक दिन के लिए राजा क्यों बनाया जाता है ?

उ. विरक्त की विरक्ति जानने तथा मोह-विजय की दृढ़ भावना जानने के लिए।

(e) निदान करने के कितने रूप हैं ? प्रथम दो लिखिए।

उ. निदान करने के 9 रूप हैं।

1. कोई साधु, किसी समृद्धिशाली पुरुष (चक्रवर्ती) को देखकर उसकी ऋद्धि प्राप्त करने के लिये निदान करता है।

2. कोई साध्वी, किसी ऋद्धिवन्त स्त्री (श्री देवी) को देखकर उसके सुख प्राप्त हेतु निदान करती है।

(f) प्रतिमाधारी साधु के प्रतिमा-पालन का वर्णन किस आगम में है ? वह कौनसे स्थानों पर निवास कर सकता है ?

उ. प्रतिमाधारी साधु के प्रतिमा-पालन का वर्णन दशाश्रुत स्कन्ध की सातवीं दशा में है।
वह तीन स्थान में निवास कर सकता है। 1. बाग-बगीचा, 2. श्मशान-छत्री, 3. वृक्ष के नीचे।

(g) धर्मध्यान के आलम्बन कौन-कौनसे हैं ? लिखिए।

उ. 1. वायणा 2. पडिपुच्छणा 3. परियट्टणा 4. धम्मकहा

(h) रिक्त स्थानों की पूर्ति कर श्लोक को पूर्ण कीजिए।

उ. रक्तेक्षणं समदकोकिल - कंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक - स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(a) दुक्कराइं.........................नीरया। गाथा को पूर्ण कर उसका भावार्थ लिखिए।

उ. दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य।
के इत्थ देवलोएसु, केई सिज्झंति नीरया।।
भावार्थ- निर्ग्रन्थचर्या को अपना करके, दुष्कर तप-नियमों का आचरण करके और दुस्सह परीषहों को सहन करके कई साधक तो सर्वथा कर्म रज को दूर कर सिद्ध हो जाते हैं और कई उच्च देवलोकों में उत्पन्न होते हैं।

(b) गिहिणो.........................आउरस्सरणाणि य। गाथा को पूर्ण कर उसका भावार्थ लिखिए।

उ. गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीव-वत्तिया।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य।।
भावार्थ- जैन निर्ग्रन्थ धैर्यवान् और निस्पृह होता है। वह गृहस्थ से सेवा नहीं लेता, क्योंकि उसका जीवन स्वाश्रयी है। अपने कुल आदि का परिचय देकर भिक्षा नहीं लेता, मिश्रजल का उपयोग और रूग्णावस्था में परिजनों का स्मरण भी नहीं करता, क्योंकि उसको राग विजय करना है।

(c) अट्ठावए.........................जोइणो। गाथा को पूर्ण कर उसका भावार्थ लिखिए।

उ. अट्ठावए य नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छं पाहणा पाए, समारंभं च जोइणो।।
भावार्थ- अष्टापद-जुआ और पासों से खेल खेलना। बिना कारण छत्र धारण करना। सावद्य चिकित्सा करना। पैरों में चप्पल, जूता आदि पहनना। अग्नि का आरम्भ करना, बिजली जलाना आदि।

(d) ''संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ'' का क्या आशय है ?

उ. संयम के अभाव में भी तप होता है, जिसे बाल तप कहते हैं। लक्ष्य के अभाव में की गई साधना मूल सहित दुःखों का अन्त नहीं कर सकती। लक्ष्य की ओर गतिशील होते ही संयमपूर्वक तप की साधना प्रारंभ हो जाती है। जहाँ भी संयम है, वहाँ सकाम निर्जरा अर्थात् तप की नियमा है। अस्तु संयमेन तपसा, संयमपूर्वक तप साधना आत्महितकारी है।

(e) बंध तत्त्व के कितने भेद हैं ? संक्षेप में उनके अर्थ लिखिए।

उ. बन्ध के चार भेद- 1. प्रकृति बन्ध, 2. स्थिति बन्ध, 3. अनुभाग बन्ध और 4. प्रदेशबन्ध।

1. प्रकृति बन्ध- जीव के साथ सम्बद्ध कर्म-पुद्गलों में ज्ञान को आवरण करने, दर्शन को रोकने, सुख-दु:ख देने आदि अलग-अलग स्वभाव का होना 'प्रकृति बन्ध' कहलाता है।

2. स्थिति बन्ध- जीव के साथ सम्बद्ध कर्म- पुद्गलों की, अमुक काल तक ज्ञान को आवरण करने आदि रूप अपने-अपने स्वभाव का त्याग न करते हुए, जीव के साथ रहने की काल मर्यादा को 'स्थिति बन्ध' कहते हैं।

3.अनुभाग बन्ध- कर्मों के फल देने की तीव्रता-मन्दता आदि विशेषताओं का न्यूनाधिक होना 'अनुभाग बन्ध' कहलाता है। अनुभाग बन्ध को अनुभाव बन्ध, अनुभव बन्ध तथा रस बन्ध भी कहते हैं।

4.प्रदेश बन्ध- जीव के साथ सम्बद्ध कार्मण वर्गणा के स्कन्धों का न्यूनाधिक प्रदेश वाला होना 'प्रदेश बन्ध' कहलाता है।

भक्तामर स्तोत्र के निम्नांकित श्लोकों को पूर्ण कर उनका भावार्थ भी लिखिए।

(f) कल्पांतकाल..शमयत्यशेषम्।।

उ. कल्पांतकाल - पवनोद्धत - वह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम्।।

भावार्थ— भयंकर दावाग्नि आपके भक्तजनों का कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकती।।

(g) शुंभत्प्रभावलय..सौम्याम्।।

उ. शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रय द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरंतर भूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्।।

भावार्थ— इस श्लोक में 'भामण्डल' नामक सातवें प्रातिहार्य का वर्णन है। भामण्डल की प्रभा करोड़ों सूर्य के समान तेजयुक्त होते हुए भी आतप देने वाली न होकर चन्द्रमा के समान शीतल व रात्रि का अन्धकार हरने वाली है।

(h) वल्गतुरंग..इवासु-भिदामुपैति।।

उ. वल्गत्तुरंग - गजगर्जित - भीमनाद -माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूख - शिखापविद्धं,त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु-भिदामुपैति।।

भावार्थ— जैसे सूर्य के उदय होते ही अन्धकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार भयानक संग्राम में आपके नाम के कीर्तन से बड़े से बड़ा सैन्य बल भी नष्ट हो जाता है।

कक्षा : सातवीं – जैन धर्म कोविद (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'विप्पमुक्काण' का अर्थ है-
(क)मोक्ष का अभिलाषी (ख) परिग्रह से मुक्त
(ग) दमन करने वाला (घ) शान्त (ख)

(b) छठा अनाचीर्ण है -
(क) सिणाणे (ख) वीअणे
(ग) राइभत्ते (घ) पलियंकए (क)

(c) उत्तम समाधि वाले साधु वर्षाकाल में कैसे होते हैं -
(क) अवाउडा (ख) आयावयंति
(ग) पडिसंलीणा (घ) धूअमोहा (ग)

(d) 'सिंगबेरे' का क्या अर्थ है -
(क) मूला (ख) बीज
(ग) अंजन (घ) अदरक (घ)

(e) गृहस्थ से सावद्य प्रश्न पूछना क्या कहलाता है -
(क) संपुच्छणा (ख) देहपलोयणा
(ग) गिहिमत्ते (घ) सन्निही (क)

(f) निश्चय में जीव के भेद हैं-
(क) 563 (ख) 14
(ग) 01 (घ) 06 (ग)

(g) बेइन्द्रिय का भेद है -
(क) खटमल (ख) लट
(ग) शलगम (घ) मकोड़ी (ख)

(h) 'रतालु' किसका भेद है -
(क) प्रत्येक वनस्पति (ख) साधारण वनस्पति
(ग) तेइन्द्रिय (घ) बेइन्द्रिय (ख)

(i) 'गन्धर्व' किस जाति के देव का भेद है -
(क) वाणव्यन्तर (ख) ज्योतिषी
(ग) त्रिजृम्भक (घ) परमाधामी (क)

(j) 'स्पर्श' के कुल भेद होते हैं-
(क) 100 (ख)46
(ग) 184 (घ) 94 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) प्रकृति और प्रदेश बन्ध योग से निमित्त से होते हैं। (हाँ)
(b) द्रव्य से सिद्ध जीव अभव्य से असंख्य गुणे हैं। (नहीं)
(c) अनेक सिद्ध का उदाहरण भगवान महावीर है। (नहीं)
(d) दशाश्रुतस्कन्ध में निदान के नौ रूप बताये हैं। (हाँ)
(e) 22वें तीर्थंकर के समय राजपिण्ड ग्रहण करना कल्प की ऐच्छिकता है। (हाँ)
(f) तिर्यंच गति पुण्य प्रकृति है। (नहीं)
(g) राग उत्पन्न करने वाली क्रिया पेज्जवत्तिया है। (हाँ)
(h) अनित्य भावना अनाथी मुनि ने भाई थीं। (नहीं)
(i) भिक्षाचर्या का दूसरा नाम वृत्ति संक्षेप है। (हाँ)
(j) गुरु के समक्ष दोषों को प्रकट करना प्रतिक्रमण कहलाता है। (नहीं)

प्र.3	**मुझे पहचानो :-**	**10x1=(10)**
(a)	जो जीवादि नवतत्त्वों को जानता है, वह मुझे प्राप्त होता है।	सम्यक्त्व
(b)	मैंने स्त्री पर्याय से मोक्ष प्राप्त किया।	चन्दनबाला
(c)	हमारे कुल भेद 62 होते हैं।	14 मार्गणाएँ
(d)	विपरिणामानुप्रेक्षा मेरी एक अनुप्रेक्षा है।	शुक्ल ध्यान
(e)	टप-टप आँसू गिराना मेरा लक्षण है।	आर्त्तध्यान
(f)	मैं विनय का सातवाँ भेद हूँ।	लोकोपचार
(g)	मैं कंसराजा का छोटा भाई था।	अतिमुक्त
(h)	मेरे 72 हजार पत्नियाँ थीं।	वसुदेव
(i)	मैं सरल स्वभाव वाला हूँ।	निर्ग्रन्थ
(j)	अनाचीर्णों में मेरा नम्बर दूसरा है।	कीयगडं

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2=(28)**

(a) गाथा को पूर्ण कीजिए।
गिहिणो ....णाणि य।।

उ. गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीव-वत्तिया।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य।।

(b) निर्ग्रन्थों का विशिष्ट आचार क्या है ?

उ. निर्ग्रन्थ पाँच आश्रवों के त्यागी, तीन गुप्तियों से गुप्त, षट्काय जीवों की यतना करने वाले, पाँच इन्द्रियों को वश में रखने वाले, धीर और ऋजुदर्शी होते हैं।

(c) 'पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे' का क्या अर्थ है ?

उ. पूर्वानुपूर्वी- अनुयोग द्वार सूत्र में पूर्वानुपूर्वी आदि का विवेचन उपलब्ध है। चौबीस तीर्थंकरों की पूर्वानुपूर्वी ऋषभ, अजित....... पार्श्व, महावीर के रूप में बताई गई हैं। वहाँ इसी क्रम से चली आ रही परिपाटी समझना। अर्थात् इस अवसर्पिणी के प्रथम तीर्थंकर अथवा अनादि कालीन तीर्थंकरों की परम्परा पाद विहार की ही रही है।

(d) 9 निदानों में तीसरा निदान क्या है ?

उ. कोई साधु, पुरुषपना दुःखदायी है, अतः स्त्री बनने के लिये निदान करता है।

(e) प्रतिमा आराधन का 13वाँ नियम क्या है ?

उ. अशुचि निवारण एवं भोजन के पश्चात् हाथ-मुँह आदि धोने के अतिरिक्त, हाथ, पाँव, दाँत,आँख, मुख आदि नहीं धोवे।

(f) कौनसे दो सूत्रों में भिक्षा-विधि का उल्लेख है?

उ. दशवैकालिक सूत्र और आचारांग सूत्र में।

(g) सूक्ष्म किसे कहते हैं ?

उ. सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से जिन जीवों का शरीर अत्यन्त सूक्ष्म हों, वे सूक्ष्म कहलाते हैं।

(h) जलचर के पाँच भेद कौनसे हैं ?

उ. 1. मच्छ 2. कच्छप 3. ग्राह 4. मगर और 5. सुंसुमार

(i) इरियावहिया क्रिया का क्या अर्थ है ?

उ. सयोगी वीतरागियों को लगने वाली क्रिया 'इरियावहिया' क्रिया है।

(j) भिक्षाचर्या के कितने भेद हैं ? अंतिम भेद का नाम लिखिए।

उ. भिक्षाचर्या के तीस भेद हैं। भिक्षाचर्या का अंतिम भेद- 'संखादत्तिए' है।

(k) कषाय प्रतिसंलीनता किसे कहते हैं ?

उ. क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों को उत्पन्न न होने देना और उत्पन्न हो जाने पर इन्हें निष्फल बनाना कषाय प्रतिसंलीनता है।

(l) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-
उन्निद्र...शिखाभिरामौ।।

उ. उन्निद्र- हेमनवपंकज -पुंजकांती- पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ।

(m) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-
अम्भोनिधौ ....वाडवाग्नौ।।

उ. अम्भोनिधौ क्षुभित- भीषण- नक्रचक्र- पाठीन- पीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ।।

(n) भक्तामर स्तोत्र की 40वीं गाथा कल्पान्त काल..........शमयत्यशेषम्।। का भावार्थ लिखिए।

उ. भयंकर दावाग्नि आपके भक्तजनों का कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकती।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) खवित्ता पुव्वकम्माइं ....परिनिव्वुडे। गाथा को पूर्ण करते हुए भावार्थ लिखिए।

उ. खवित्ता पुव्वकम्माइं , संजमेण तवेण य।
सिद्धि-मग्ग-मणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे।।
भावार्थ- अवशेष कर्मों को खपाने के लिए वे देवलोक से आकर मनुष्य भव धारण करते हैं, जहाँ संयम और तप से संचित्त कर्मों का क्षय करके सिद्धि मार्ग पर चलते हुए, जीव मात्र के रक्षक मुनि अन्त में निराबाध सुख की प्राप्ति करते हैं।

(b) परीसह........................... महेसिणो।। गाथा को पूर्ण करके शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ. परीसह-रिऊदंता, धूअमोहा जिइंदिया।
सव्व दुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो।।
भावार्थ- निर्ग्रन्थ क्षुधा-पिपासादि परीषहों को सहन करने वाले, मोह रहित और जितेन्द्रिय होते हैं। ऐसे महर्षि दुःख-मुक्ति के लिए आत्म-साधना में शक्ति लगाते हैं।

(c) सन्निही........................पलोयणा य।। गाथा को पूर्ण कर बताइये इसमें कितने अनाचीर्णों का वर्णन आया है ?
सन्निही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए।
संवाहणा दंत पहोयणा य, संपुच्छणा देह पलोयणा य।।
इसमें 8 अनाचीर्णों का वर्णन आया है।

(d) 'संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' का क्या आशय है ?
संयम के अभाव में भी तप होता है, जिसे बाल तप कहते हैं। लक्ष्य के अभाव में की गई साधना मूल सहित दुःखों का अन्त नहीं कर सकती। लक्ष्य की ओर गतिशील होते ही संयमपूर्वक तप की साधना प्रारम्भ हो जाती है। जहाँ भी संयम है, वहाँ सकाम निर्जरा अर्थात् तप की नियमा है। अस्तु संयमेन तपसा, संयमपूर्वक तप साधना आत्महितकारी है।

(e) सुरा, अग्नि व द्वीपायन ऋषि द्वारिका के विनाश के कारण क्यों और कैसे बने?
एक दिन कुछ यादव नगरी से बाहर गये, वहाँ उन्हें खेलते-खेलते प्यास लगी, वे पानी की तलाश में द्वीपायन ऋषि के आश्रम की तरफ आ गये तथा गड्डों में भरी हुई शराब पी ली, कुछ आगे बढ़ने पर द्वीपायन ऋषि यज्ञ करता दिखाई दिया। नशे में उन्होंने मरे हुए सर्प को उठाकर द्वीपायन ऋषि पर डाल दिया तथा खूब परेशान किया। ऐसा करने पर क्रोधित होकर द्वीपायन ऋषि ने द्वारिका का विनाश करने का निदान कर लिया।

(f) द्वारिका नगरी औदारिक पुद्गलों से बनाई गई थी, इसे सिद्ध कीजिए।
ठाणांग सूत्र के चौथे ठाणे के उद्देश्क तीन में बतलाया कि चारों शरीर जीव सहगत होते हैं, अर्थात् ये प्रायः जीव से भिन्न नहीं पाये जाते। केवल औदारिक ही ऐसा शरीर है जो बिना जीव के भी

मिलता और दिखाई देता है। संसार में जितने भी जीव या अजीव के पुद्गल दिखाई देते हैं वे सब औदारिक शरीर या उसके अवशेष हैं। अतःस्पष्ट हुआ कि द्वारिका नगरी देव द्वारा औदारिक पुद्गलों से बनाई गई थी। औदारिक पुद्गल होने से ही वह देव द्वारा जलाकर नष्ट कर दी गई थी।

(g) चौदह अशुचि स्थानों के नाम लिखिए।
1. उच्चारेसु वा 2. पासवणेसु वा 3. खेलेसु वा 4. सिंघाणेसु वा
5. वंतेसु वा 6. पित्तेसु वा 7. पूएसु वा 8. सोणियेसु वा
9. सुक्केसु वा 10. सुक्क पुग्गल परिसाडेसु वा 11. विगय जीव कलेवरेसु वा
12. इत्थी पुरिस संजोएसु वा 13. णगर णिद्धमणेसु वा 14. सव्वेसु असुइट्ठाणेसु।

(h) आश्रव के 42 भेद कौनसे हैं ? लिखिए।
(1-5) पाँच अव्रत-प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह का त्याग न करना।
(6-10) पाँच इन्द्रिय- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय को वश में न रखना।
(11-14)चार कषाय- क्रोध, मान, माया, लोभ का सेवन करना।
(15-17) तीन योग-मन, वचन, काया को शुभ व्यापार में लगाना।
(18-42) पच्चीस क्रियाओं का सेवन करना।

(i) 10 यतिधर्म के नाम और उनके शब्दार्थ लिखिए।
1. खंती (क्षमा), 2. मुत्ति (सन्तोष), 3. अज्जवे (आर्जव-ऋजुता), 4. मद्दवे (मार्दव-मृदुता),
5. लाघवे (लघुता), 6. संजमे (संयम), 7. सच्चे (सत्य), 8. तवे (तप),
9. चियाए (त्याग) 10. बंभचेरवासे (ब्रह्मचर्य)

(j) काय क्लेश तप का क्या अर्थ है? इसके प्रथम 5 भेदों के नाम लिखिए।
कर्मों की निर्जरा के लिये उग्र वीरासन आदि आसन करना, शरीर की शोभा शुश्रूषा का त्याग करना, इस प्रकार शरीर को कष्ट सहिष्णु बनाना 'काय क्लेश तप' है।
1. ठाणट्ठितिए- खड़े-खड़े कायोत्सर्ग करें।
2. ठाणाइए- बार-बार कायोत्सर्ग करें।
3. उक्कुडु आसणिए- उकडु आसन से बैठें।
4. पडिमट्ठाई- प्रतिमाएँ धारण करें।
5. वीरासणिए- वीरासन से बैठें।

(k) स्वाध्याय किसे कहते हैं ? इसके भेदों को अर्थ सहित लिखिए।
आत्मस्वरूप का अध्ययन करना, मर्यादा पूर्वक जिनवाणी का अध्ययन करना 'स्वाध्याय तप' कहलाता है।
भेद- 1. वायणा(वाचना)-गुरु से सूत्र अर्थ पढ़ना।
2. पडिपुच्छणा (प्रतिपृच्छना)- शंका-समाधान के लिए अथवा विशेष निर्णय के लिये प्रश्न करना।
3. परियट्टणा(परिवर्तना)- सीखे हुए ज्ञान को बार-बार फेरना।
4. अणुप्पेहा (अनुप्रेक्षा)- सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान का मनन-चिन्तन करना।
5. धम्मकहा(धर्मकथा)- धर्मोपदेश देना।
निम्न श्लोक को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।

(l) शुम्भत्प्रभा..सौम्याम्।।
शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते, लोकत्रय-द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर- निरंतर भूरिसंख्या, दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्।।
भावार्थ- इस श्लोक में 'भामण्डल' नामक सातवें प्रातिहार्य का वर्णन है। भामण्डल की प्रभा करोड़ों

सूर्य के समान तेजयुक्त होते हुए भी आतप देने वाली न होकर चन्द्रमा के समान शीतल व रात्रि का अन्धकार हरने वाली है।

(m) इत्थं यथा...विकासिनोऽपि।।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र! धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि।।

भावार्थ- जैसे प्रकाशमान तारागण सूर्य के समान प्रकाशित नहीं हो सकते, वैसे ही हरिहरादि देव आपकी समवसरण जैसी विभूति को धारण नहीं कर सकते।

(n) उद्भूत..तुल्यरूपाः।।

उद्भूतभीषणजलोदर-भारभुग्नाः शोच्यां दशामुपगताश्च्युत- जीविताशाः।
त्वत्पाद- पंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा- मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः।।

भावार्थ- भगवान के चरण कमलों की धूलि से ही भयानक जलोदर रोग से पीड़ित रोगी भी ठीक हो जाते हैं।

कक्षा : सातवीं – जैन धर्म कोविद (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) आस्रव से आत्मा में आते हैं-
(क) शुभ कर्म (ख) अशुभ कर्म
(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं (ग)

(b) राग-द्वेष की उत्पत्ति से लगने वाली क्रिया है -
(क) पाडुच्चिया (ख) दिट्ठिया
(ग) पुट्ठिया (घ) उपर्युक्त तीनों (क)

(c) ऊँचे स्वर से रोना-चिल्लाना है-
(क) आर्त्त ध्यान (ख) रौद्र ध्यान
(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं (क)

(d) अनुभाग बन्ध को नहीं कहते हैं-
(क) अनुभाव बन्ध (ख) अनुभव बन्ध
(ग) रस बन्ध (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं (घ)

(e) दशाश्रुतस्कन्ध में निदान करने के कितने रूप बताये हैं-
(क) 12 (ख) 11
(ग) 10 (घ) 09 (घ)

(f) भिक्षाविधि का उल्लेख किस सूत्र में है-
(क) दशवैकालिक (ख) आचारांग
(ग) दोनों में (घ) दोनों में नहीं (ग)

(g) प्रतिमाधारी किस कारण से बोलते हैं-
(क) याचना करते (ख) मार्ग पूछते
(ग) प्रश्न पूछते (घ) क तथा ख (घ)

(h) मुनि के लिए ग्रहण करने योग्य लवण है-
(क) संचल (ख) सैंधव
(ग) समुद्री (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं (घ)

(i) द्वारिका के विनाश का कारण क्या था-
(क) सुरा (ख) अग्नि
(ग) द्वीपायन ऋषि (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

(j) 'चारों शरीर जीव सहगत होते हैं।' इसका प्रमाण है-
(क) आचारांग (ख) ठाणांग
(ग) सूयगडांग (घ) भगवती सूत्र (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) साधु-साध्वियाँ दर्पण आदि में मुख देख सकते हैं। (नहीं)
(b) प्रथम चार निदानों वाला जीव केवली प्ररूपित धर्म नहीं सुन सकता। (हाँ)
(c) प्रथम तथा अंतिम तीर्थंकरों के साधुओं के लिए राजपिण्ड निषिद्ध नहीं है। (नहीं)
(d) संयम के अभाव में भी तप हो सकता है। (हाँ)
(e) जो सर्वथा चेतना शून्य है, वह अजीव नहीं है। (नहीं)
(f) एक पर्याप्त जीव की नेश्राय में असंख्यात अपर्याप्त जीव उत्पन्न होते हैं। (हाँ)
(g) सभी उरपरिसर्प जीव अन्तर्मुहूर्त्त में 12 योजन लम्बे हो सकते हैं। (नहीं)
(h) अनाथी मुनि ने अशुचि भावना भाई थीं। (नहीं)
(i) यावत्कथिक अनशन के चौदह भेद हैं। (नहीं)
(j) छठा प्रातिहार्य 'भामण्डल' है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	पृथ्वीकाय	(क) महोरग	गेरु
(b)	बेइन्द्रिय	(ख) उपदेश रुचि	शीप
(c)	तेइन्द्रिय	(ग) वैतरणी	खटमल
(d)	चौरेन्द्रिय	(घ) सुजात	बिच्छू
(e)	परमाधामी देव	(च) अव्याबाध	वैतरणी
(f)	वाणव्यन्तर देव	(छ) शीप	महोरग
(g)	लोकान्तिक देव	(ज) विपाक विचय	अव्याबाध
(h)	ग्रैवेयक देव	(झ) गेरु	सुजात
(i)	धर्मध्यान का पाया	(य) बिच्छू	विपाक विचय
(j)	धर्मध्यान का लक्षण	(र) खटमल	उपदेश रुचि

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a)	मैं देवकी को भविष्य बताने वाला हूँ।	अतिमुक्त कुमार
(b)	मैं 400 माताओं को प्रतिदिन चरण-वन्दन के लिए जाता था।	श्रीकृष्ण वासुदेव
(c)	मुझमें निदान करने के 9 रूप बतलाये हैं।	दशाश्रुत स्कन्ध
(d)	मैंने भगवान महावीर को 82 रात्रि तक अपने गर्भ में रखा।	ब्रह्मणी देवनन्दा
(e)	मैं निर्ग्रन्थों के लिए आचरण में निषिद्ध हूँ।	अनाचीर्ण
(f)	मैं प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हूँ।	नमिराज/करकण्डू मुनि
(g)	मैं सूक्ष्म पदार्थ विषयक चिन्तन में नहीं उलझने वाला ध्यान हूँ।	शुक्ल ध्यान
(h)	मैं आलोचना करने के बाद पश्चात्ताप नहीं करने वाला हूँ।	अपश्चात्तापी
(i)	मैंने संवर भावना भाई थीं।	हरिकेशी मुनि
(j)	मैं समुदाय के रूप में लगने वाली क्रिया हूँ।	समुदाण किरिया(सामुदायिक क्रिया)

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - 12x2 = (24)

(a) जैन श्रमण शोभा के लिए किनका आचरण नहीं करें ?

उ. जैन श्रमण धूप, वमन, विरेचन, बस्तीकर्म, अंजन, दाँतुन, शरीर-मालिश और विभूषा आदि का आचरण नहीं करे।

(b) कौनसे निर्ग्रन्थ ऋजुदर्शी होते हैं ?

उ. पाँच आश्रवों के त्यागी, तीन गुप्तियों से गुप्त, षट्काय जीवों की यतना करने वाले, पाँच इन्द्रियों को वश में रखने वाले ऋजुदर्शी होते हैं।

(c) उत्तम समाधि वाले संयमी साधु क्या करते हैं ?

उ. ग्रीष्मकाल में सूर्य की आतापना लेते हैं, शीतकाल में खुले बदन शीत सहन करते हैं और वर्षा ऋतु में कायिक चेष्टाओं को वश में रखकर समाधि भाव में लीन रहते हैं।

(d) भगवान की वाणी का क्या अतिशय है ?

उ. भगवान की वाणी का अतिशय यह है कि जो भी उसको सुनता है, वह अपनी भाषा में सरलता से समझ लेता है।

(e) संवर तत्त्व को परिभाषित कीजिए।

उ. जिस क्रिया द्वारा आत्मा में शुभ-अशुभ कर्मों का आना रुकता है, उसे संवर तत्त्व कहते हैं।

(f) खेचर के कोई चार भेद लिखिए।

उ. चर्मपक्षी, रोमपक्षी, समुग्ग पक्षी, वितत पक्षी।

(g) शयन पुण्य किसे कहते हैं ?

उ. शय्या-पाट-पाटला आदि देने से पुण्य प्रकृति बंधती है।

(h) 'णेसत्थिया' क्रिया कैसे लगती है ?

उ. किसी भी वस्तु आदि को फैंकने-छोड़ने से 'णेसत्थिया' क्रिया लगती है।

(i) 'पारांचिकार्ह' प्रायश्चित्त क्या है ?

उ. गृहस्थ वेश पहनाकर उत्कृष्ट बारह वर्ष तक अलग रखना, उत्कृष्ट तप कराना, बाद में पुनः दीक्षा देना।

(j) 'प्रकृति बन्ध' को परिभाषित कीजिए।

उ. जीव के साथ सम्बद्ध कर्म-पुद्‌गलों में ज्ञान को आवरण करने, दर्शन को रोकने, सुख-दुःख देने आदि अलग-अलग स्वभाव का होना 'प्रकृति बन्ध' कहलाता है।

(k) सिद्धों में पाये जाने वाले दो भावों के नाम लिखिए।

उ. क्षायिक और पारिणामिक भाव।

(l) स्वयंबुद्ध सिद्ध कौन कहलाते हैं ?

उ. जो दूसरों के उपदेश बिना स्वयमेव बोध प्राप्त कर मोक्ष में जाते हैं, वे स्वयंबुद्ध सिद्ध कहलाते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3=(36)**

(a) प्रतिमाधारी साधु के भिक्षाग्रहण करने के कोई तीन प्रकार लिखिए।

उ. नोटः- कोई तीन कारण-

1. पेटी के आकार- सन्दूक के चारों कोनों के आकार से।

2. अर्धपेटी- दो कोनों के आकार से,

3.गौ मूत्र के आकार- एक घर इधर से, दूसरा घर सामने के आगे से,

4. पतंगे के आकार से- एक घर फरस कर बीच-बीच में घर छोड़कर भिक्षा लेना, 5. शंखावर्त्त- गोल आकार से।

6. गतप्रत्यागत- जाते हुए करे तो आते हुए नहीं तथा आते हुए करे तो जाते हुए नहीं।

निम्नलिखित को पूर्ण करके उनका भावार्थ भी लिखिए।

(b) संजमे.......................................महेसिणं।।

उ. संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं।

तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।।

भावार्थ -संयम धर्म में स्थिर, परिग्रह से मुक्त और षट्कायिक जीवों के रक्षक निर्ग्रन्थ महर्षियों के लिये ये कार्य आचरण में निषिद्ध माने गये हैं।

(c) **खवित्ता......................................परिनिव्वुडे।।**

उ. खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।

सिद्धि-मग्ग-मणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे।।

भावार्थ -अवशेष कर्मो को खपाने के लिए वे देवलोक से आकर मनुष्य भव धारण करते हैं, जहाँ संयम और तप से संचित कर्मो का क्षय करके सिद्धि मार्ग पर चलते हुए, जीव मात्र के रक्षक मुनि अन्त में निराबाध सुख की प्राप्ति करते हैं।

(d) **दुक्कराइं......................................नीरया।।**

उ. दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य।

के इत्थ देवलोएसु, केई सिज्झंति नीरया।।

भावार्थ -निर्ग्रन्थचर्या को अपना करके, दुष्कर तप-नियमों का आचरण करके और दुस्सह परीषहों को सहन करके कई साधक तो सर्वथा कर्म रज को दूर कर सिद्ध हो जाते हैं और कई उच्च देवलोकों में उत्पन्न होते हैं।

(e) **सव्वमेयमणाइण्णं......................................विहारिणं।।**

उ. सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।

संजमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं।।

भावार्थ -संयम साधना में तत्पर और लघुभूत विहारी निर्ग्रन्थ महर्षियों के लिए उपर्युक्त सभी कार्य अनाचीर्ण कहे गये हैं।

(f) **सोवच्चले......................................आमए।।**

उ. सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए।

सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए।।

भावार्थ :- जैन साधु के लिए सचित्त नमक अग्राह्य बतलाया है, कारण कि कच्चे नमक में असंख्य पृथ्वीकाय के जीव माने गये हैं। त्यागी मुनि के लिए 1. संचल लवण, 2. सैंधव लवण, 4. रोम का लवण, 4. समुद्री लवण, 5. ऊसर भूमि का लवण और, 6. काला लवण, इन्हें सचित्त होने पर ग्रहण करना वर्जित है।

(g) **गिहिणो......................................आउरस्सरणाणि य।।**

उ. गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीव-वत्तिया।

तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य।।

भावार्थ -जैन निर्ग्रन्थ धैर्यवान् और निस्पृह होता है। वह गृहस्थ से सेवा नहीं लेता, क्योंकि उसका जीवन स्वाश्रयी है। अपने कुल आदि का परिचय देकर भिक्षा नहीं लेता, मिश्रजल का उपयोग और रूग्णावस्था में परिजनों का स्मरण भी नहीं करता, क्योंकि उसको राग विजय करना है।

(h) **सन्निही......................................पलोयणा य।।**

उ. सन्निही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए।

संवाहणा दंत पहोयणा य,संपुच्छणा देह पलोयणा य।।

भावार्थ -घृत, तेल आदि का संग्रह रखना। गृहस्थ के पात्र थाल-कटोरे आदि भाजनों (बर्तनों) में आहार करना। राजपिंड का सेवन करना। जहाँ पूछकर इच्छानुसार दिया जाय, वैसी दानशाला से आहारादि लेना। मर्दन करना (मालिश करना)। दाँतों को धोना। दर्पण आदि में मुख देखना। गृहस्थ से सावद्य प्रश्न करना या उसकी कुशल क्षेम पूछना।

(i) **उन्निद्रहेम......................................परिकल्पयन्ति।।**

उ. उन्निद्रहेम - नवपंकज - पुंजकांती -पर्युल्लसन्नख - मयूख - शिखाभिरामौ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।

भावार्थ -जहाँ-जहाँ भगवान चरण रखते हैं, वहाँ-वहाँ देवगण कमलों की रचना करते जाते हैं।

(j) **कल्पान्तकाल......................................शमयत्यशेषम्।।**

उ. कल्पांतकाल - पवनोद्धत - वह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।

विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम्।।

भावार्थ— भयंकर दावाग्नि आपके भक्तजनों का कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकती।।

(k) **इत्थं यथा......................................विकाशिनोऽपि।।**

उ. इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।

यादृक्प्रभा दिनकृतःप्रहतान्धकारा,तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि।।

भावार्थ :- जैसे प्रकाशमान तारागण सूर्य के समान प्रकाशित नहीं हो सकते, वैसे ही हरिहरादि देव आपकी समवसरण जैसी विभूति को धारण नहीं कर सकते।

(l) **मन्दार सुन्दर......................................वचसां ततिर्वा।।**

उ. मन्दार - सुन्दर - नमेरू - सुपारिजात -संतानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टिरूद्धा।

गंधोदबिंदु - शुभमंद - मरूत्प्रपाता, दिव्या दिव : पतति ते वचसां ततिर्वा।।

भावार्थ— इस श्लोक में 'पुष्प वृष्टि' नामक छठे प्रातिहार्य का वर्णन है। भगवान के समवसरण में फूलों की वर्षा ऐसी जान पड़ती है मानो भगवान के दिव्य वचन ही फैल गये हों।